Vol 6 Issue 10 July 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | JULY - 2017

मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तूरी कुण्डल बसै' आत्मकथा में नारी का जीवन संघर्ष

प्रा. डॉ. मनोहर जमदाडे
एस. एस. ढमढेरे महाविद्यालय, तलेगाव ढमढेरे, शिरूर, पुणे.

प्रस्तावना :

हिंदी कथा साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। वे बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। अब तक उन्होंने दर्जनों उपन्यास लिखे हैं। उनके उपन्यास के केंद्र में 'नारी' है। नारी के संपूर्ण जीवन का चित्रण उन्होंने साहित्य के माध्यम से किया है। उपन्यास के साथ ही उनका सही परिचय उनकी आत्मकथा से मिलता है। आत्मकथा के माध्यम से उन्होंने स्त्री का जीवन संघर्ष, स्त्री का पारिवारिक संघर्ष, ग्रामीण परिवेश और नारी, रूढ़ि परंपराओं से शोषित नारी, स्त्री का विद्रोही स्वर, स्त्री अस्मिता की तलाश, विधवा स्त्री की सामाजिक स्थिति, स्त्री का मानवतावादी चित्रण, स्त्री का मानसिक द्वंद्व, पुरुष प्रधान संस्कृति के कारण शोषित नारी, अनमेल विवाह आदि समस्याओं का चित्रण किया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने 'कस्तूरी कुण्डल बसै' इस आत्मकथा में उन्होंने स्वातंत्र्यपूर्व से बीसवीं सदी के उत्तरार्ध तक के समय की कथा का चित्रण किया है। लेखिका का जन्म अलीगढ़ जिले के सिकुर्रा गाँव में हुआ था। उनका आरंभिक जीवन जिला झाँसी के खिल्ली गाँव में व्यतीत हुआ। उन्होंने अपने जीवनकाल में जो कुछ देखा, सुना उसे लिख डाला। तत्कालीन समय में स्त्री की सामाजिक, सांस्कृतिक स्थितियों पर प्रकाश डाला है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में तो स्त्री को बहुत भयानक स्थिति से गुजरना पड़ता था। पुरुषों की खाल बचाने के लिए स्त्री की बलि दी जाती थी। लेखिका की माँ कस्तूरी की शादी भी कुर्की से बचने के लिए आठ सौ रुपए लेकर हीरा नामक एक वयस्क व्यक्ति से की जाती है। कस्तूरी शादी के लिए विरोध भी करती है। पर माँ उसे समझा–बुझाकर उसे शादी के लिए राजी करती है। शादी के कुछ समय बाद ही हीरा की मृत्यु हो जाती है। तब कस्तूरी की गोद में एक बेटी थी और घर में उसके बूढ़े ससुर साथ में ढेर सारा कर्जा। अनमेल विवाह के कारण अपने यौवन में ही उसे विधवा होकर अपमानभरा जीवन जिना पड़ता है।

उस गाँव में कोई भी स्त्री साक्षर नहीं थी। खेत में काम करना और पति की सेवा करना तथा पारंपारिक स्त्री प्रतिमा को बनाए रखने में ही वे अपने को धन्य मानती थी। घर में तथा समाज में निर्णय लेने का अधिकार केवल पुरुषों को ही था। कस्तूरी जैसी संघर्षशील औरत भी बेटी की शादी तय करने का अधिकार गाँववालों को देकर तमाशा देखने के लिए मजबूर होती है या उस समय की सामाजिक मान्यताएँ उसे ऐसा करने में मजबूर कर देती है। उस समय गाँव की स्त्रियाँ अपने स्वतंत्रता से भी अनभिज्ञ थी। स्त्री के जन्म का स्वागत नहीं किया जाता था। जब मैत्रेयी पुष्पा को बेटी होती है तब उसके पति पढ़े लिखे डॉक्टर होकर भी खुश नहीं होते। देश को आजादी मिलने पर भी स्त्री का सामाजिक दर्जा नहीं बदला था।

मैत्रेयी पुष्पा ने आत्मकथा में स्त्री के पारिवारिक जीवन पर प्रकाश डाला है। भारतीय परिवार में स्त्री का क्या स्थान है, किन मान–मर्यादाओं का पालन करते हुए उसे जीना पड़ता है। उसे कितना अधिकार और स्वातंत्र्य है आदि बातों पर प्रकाश डाला है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'कस्तूरी कुण्डल बसै' में तीन पीढ़ियों की स्त्रियों के पारिवारिक जीवन पर प्रकाश डाला है। जिसमें स्वातंत्र्यपूर्व स्त्री का पारिवारिक जीवन, स्वातंत्र्योत्तर स्त्री का पारिवारिक जीवन तथा आधुनिक स्त्री का पारिवारिक जीवन उजागर होता है। पहली स्त्री मैत्रेयी पुष्पा की नानी, कस्तूरी की माँ है, वह पारंपारिक विचारोंवाली है। अपने परिवार के हित का विचार करती है। उनकी दृष्टि से अपने लड़कों की सुरक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसी कारण वह कस्तूरी की शादी प्रौढ़ व्यक्ति के साथ आठ सौ रुपए लेकर तय करती है। तत्कालीन समय में उसकी सोच के दो कारण हो सकते हैं–एक तो घर की इज्जत बच जाएगी। तथा जवान लड़की अपने ससुराल जाकर सुरक्षित रह जाएगी। आजादी के पूर्व तो स्त्री और पुरुष दोनों भी अंग्रेजों के गुलाम थे। फर्क इतनाही था कि स्त्री प्राचीन मान्यताओं को निभाती थी। लड़कों का परिवार में विशेष महत्त्व था। बेटियों के लिए परिवार में जगह नहीं थी। जिसका शिकार लेखिका की माँ कस्तूरी होती है। पति की मृत्यु के बाद मैत्रेयी की तथा ससुर की परवरिश की जिम्मेदारी कस्तूरी पर पड़ती है। ऐसे विकट समय में भी वह डगमगाती नहीं। परिवार की लाठी भी बनती है और पढ़ाई भी करती है। स्त्री होकर भी ससुर की परवरिश करती है, खुद संघर्ष कर परिवार को चलाती है। उसके ससुर भी उस पर प्रभावित हो जाते हैं। कस्तूरी का पारिवारिक जीवन संघर्षशील होकर भी आदर्शवत है। इस आत्मकथा में तीसरा और महत्त्वपूर्ण स्त्री पात्र स्वयं लेखिका है। उनकी शादी एक डॉक्टर के साथ होती है। डॉक्टर के साथ वे कभी सुखी नहीं हो पायी। छोटी–छोटी बातों के लिए अपमानित किया जाता है। बार–बार उसे गँवार कहकर नीचा दिखाते हैं। वह मायके जाने पर छह महीने तक ससुराल से कोई लेने नहीं आता। मैत्रेयी पुष्पा को जब पहली बेटी होती है तो घर का कोई सदस्य खुश नहीं होता। पति भी झूठ–मूठ की हँसी हँसते हैं। पति पत्नी का गले मिलना, हँसना रोना भी परिवार में स्वीकार्य नहीं था। मैत्रेयी पति के गले लगकर रोने पर देवर चिल्हाकर कहते हैं– "भाभी भइया के गले लगकर रोती हैं, हमने देखा है।"[1] परिवार में स्त्री को अपना दुःख पति के पास व्यक्त करना भी मान्य नहीं था।

'कस्तूरी कुण्ड़ल बसै' इस आत्मकथा में मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी माँ कस्तूरी के जीवन संघर्ष पर प्रकाश डाला है। उसके जीवन संघर्ष का आरंभ उसकी शादी से होता है। एक प्रौढ़ आदमी से शादी कर अपने वैधव्य का सपना वह पहले ही देख चुकी थी। वह थोड़े ही दिनों में पूरा होता है। पति की मृत्यु के बाद उसके संघर्ष का प्रारंभ होता है। विधवा को समाज में प्रतिष्ठा नहीं होती केवल उपेक्षा सहन करनी पड़ती है। पर कस्तूरी ऐसा जीवन नहीं

जीना चाहती, वह स्वावलंबी बनना चाहती है। इसीलिए वह शिक्षा का अस्त्र हाथ लेती है। कापी–किताब लेकर इगलास नामक कस्बे में पढ़ने के लिए पैदल चली जाती है। स्कूल जाते समय सारा गाँव भौचक होकर देखता है। बड़े, बूढ़े, जवान और बच्चे उसे देखकर मुस्कुराते हैं। कस्तूरी पागल हुई है यह बात सारे गाँव में फैल जाती है। यह खबर जब मायके पहुँचती है तब माँ भी माथा पीटती है। पर कस्तूरी किसी की तरफ ध्यान न देते हुए अपनी पढ़ाई जारी रखती है। पति की मृत्यु के बाद पति का कर्जा चुकाने के लिए वह जी जान से कोशिश करती है। अपना स्वाभिमान किसी के सामने नहीं झुकने देती। इस संदर्भ में वे कहती हैं–''गायें पालीं। तमाकू और आलू की खेती की मैं बहू की जगह मजदूर और ग्वालिन बन गई। बछड़े हुए बाँके बैल। एक–एक की कीमत कर्ज अदायगी की रकम बन गई। गाँव–गाँव जाती, उनके विश्वास पर रुपए गिन देती, जिन्होंने संकटकाल में तेरे पिता की मदद की होगी।''[2] महिलाओं के उत्थान के लिए जीवन भर काम करती है। कई महिलाओं को अपने पासबुक से पैसे निकालकर देती है। जब तत्कालीन मुख्यमंत्री औरतों को ग्रामसेविका पद को समाप्त करने की घोषणा करते हैं तो कस्तूरी सरकार के खिलाफ आंदोलन करती है। उसे गिरफ्तार भी किया जाता है पर वह पीछे नहीं हटती अपना संघर्ष जारी रखती है।

इस आत्मकथा में ग्रामीण परिवेश के स्त्री जीवन पर प्रकाश डाला गया है। गाँव में रहने के कारण वहाँ के वातावरण का प्रभाव किस प्रकार नारी जीवन पर पड़ा है इसका सूक्ष्म चित्रण हुआ है। इस आत्मकथा में स्वातंत्र्यपूर्व गाँव में स्त्री की मानसिकता तथा स्वातंत्र्योत्तर स्त्री की मानसिकता दृष्टिगोचर हुई है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में गाँव के स्त्री और पुरुष दोनों भी शोषित दिखाई देते हैं। लेखिका की नानी अंग्रजों की गुलामी से बचने के लिए कस्तूरी की शादी एक प्रौढ़ व्यक्ति से कराती है। अनमेल विवाह के कारण पति की मृत्यु होने पर पत्नी को पूरा जीवन विधवा के रूप में गुजारना पड़ता था। कस्तूरी के पति हीरालाल की मृत्यु होने पर कस्तूरी को वैधव्य भरा जीवन जीना पड़ता है। स्त्री को दूसरे गाँव भी जाना हो तो किसी पुरुष को साथ लेकर ही जाना पड़ता था। वह भी आँखें झुकी हुई चाहिए। इस संदर्भ में लेखिका गाँव के वातावरण का चित्रण करती हुई लिखती हैं– ''गाँव में बहुओं का एक कायदा होता है–रस्सा, हँसिया, खुरपी, डलिया, लेकर निकलें तो आँखें झुकी रहें, चेहरा ढँका हुआ हो। गाँव से दूसरें गाँव तक जाना है तो किसी मर्द के साथ, भले वह दस साल का लड़का रहें।''[3] देश आजाद हो गया लेकिन स्त्री की गुलामी कायम रहीं। परिवार में, समाज में वह सम्मानित नहीं हो पायी। ऐसी विपरित परिस्थिति में भी कस्तूरी किताब–कापी का झोला लेकर इगलास नामक गाँव में पढ़ने के लिए जाती है। गाँव में विधवा स्त्री की हमेशा निंदा की जाती है। स्त्री शिक्षा संबंधी लोग जागृत नहीं थे। ऐसी परिस्थिति में कस्तूरी का शिक्षा का कदम कितना निंदनीय माना जा सकता है इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। पर कस्तूरी समाज की परवाह किये बिना शिक्षा लेकर 'ग्रामसेविका' इस पद को प्राप्त करती है। इतना कुछ होने पर भी ग्रामीण समाज में वह प्रतिष्ठित नहीं हो जाती। गाँव में महत्त्वपूर्ण निर्णय तो पुरुष ही लेते थे। स्त्रियाँ केवल देखने की भूमिका लेती थी। मैत्रेयी पुष्पा की शादी तय करते समय भी कस्तूरी केवल देखने का काम करती है। रिश्ता तय करने का काम तथा दहेज के लेन–देन का काम तो गाँव के पुरुष कर रहे थे। जो कस्तूरी स्त्री को स्वावलंबन की बातें सीखाने की कोशिश कर रही थी। वह भी गाँव के सामने चुप हो जाती है। गाँव में रूढ़ि–परंपरा, अंधविश्वास चरम सीमा पर था। गाँव की स्त्रियाँ देवी–देवताओं के गीत गाने और पूजा–पाठ करने में ही खुदको धन्य मानती थी। रूढ़ि परंपरा का निर्वाह करती थी। विधवा की कोई इज्जत गाँव में नहीं थी। इस संदर्भ में कस्तूरी कहती है–''जिस गाँव को छोड़ गई तब यही तो मान लिया था कि कूपमंडूप की तरह पड़े रहने से रोशनी के दर्शन कभी नहीं होंगे। इस गाँव में उन्नती, तरक्की का सूरज कब चमकेगा मालूम नहीं। रूढ़ियों, परंपराओं, अंधविश्वासों को काटते हुए कैसी तो बेशर्मी साधनी पड़ी कि लोगों ने उन्हें न गाँव की स्त्रियों में गिना, न पुरुषों में। विचित्र जीव की तरह देखा, अजनबी कर दी।''[4]

इस आत्मकथा में लेखिका ने मानवतावाद पर भी प्रकाश डाला है। कस्तूरी, मैत्रेयी पुष्पा, गाँव के लोग, खिल्ली के चिमनसिंह (दादा) इनमें मानवतावाद दिखाई देता है। कस्तूरी के पति की मृत्यु होने पर वह पढ़ाई कर अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है। ग्रामसेविका बनने पर स्त्री स्वावलंबन के लिए 'महिला मंगल' समाज सेवी संस्था की स्थापना करती है। समाज में विधवा परित्यक्ता, अनाथ महिलाओं को प्रशिक्षण देकर अपने पैरों पर खड़ा करने की कोशिश करती है। गौरा के लिए वह अपने पासबुक से पैसे निकालकर देती है। हरबा, सरला और नर्मदा जैसी ग्रामलक्ष्मियों के लिए सालोसाल खर्चा उठाती है। वही मानवतावाद मैत्रेयी पुष्पा में बचपन से ही दिखाई देता है। मैत्रेयी के साथ पढ़ाई करनेवाला चमार का लड़का एदल्ला बहुत गरीब है। वह जब मट्ठा और रोटी खाने लगता तो मैत्रेयी घर से गुड़ ले जाकर उसे देती थी, ताकि मट्ठा अधिक खट्टा न लगे। रास्ते में आते–आते कुछ आवारा लड़के एदल्ला को पीटते हैं, उसे बाँध देते हैं। तो मैत्रेयी पुष्पा उसकी मदद करती है। यही मानवीयता उन्हें महान बना देती है।

आज भी गाँव–गाँव में मानवता दिखाई देता है। सुख–दुःख में लोग इकट्ठे हो जाते हैं। मैत्रेयी की शादी तय करने के लिए गाँव के सभी लोग इकट्ठे होकर शादी की बात करते हैं। इतनाही नहीं गाँव की स्त्रियाँ भी उसके हित में अपनी जाति–पाती भूलकर एक होती है। इस संदर्भ में लेखिका लिखती हैं– ''कलावती चाची भले जाटिनी हैं चम्पाराम भले कुम्हार हैं, खेरापतिन जाति की ब्राह्मणी हैं, पर जन्म को छोड़ दे तों स्वभावतः उनकी एक ही जाति बनती है, मनुष्य जाति।''[5] कस्तूरी खिल्ली में चिमनसिंह (दादा) के यहाँ रही थी। मैत्रेयी की शादी में वे पंद्रह लोगों को लेकर गाँव में आते हैं। इतनाही नहीं चावल, आटा, दालें, बेसन की बोरियाँ, घी के टिन, साड़ियों की पेटी लाकर कस्तूरी के हवाले करते हैं। उनके आने से कस्तूरी के खुशी का ठीकाना नहीं रहता। इससे अच्छे मानवतावाद के उदाहरण शायद ही देखने को मिलते हैं। जिसे मैत्रेयी पुष्पा जी ने आत्मकथा में चित्रित किया है।

'कस्तूरी कुण्डल बसै' इस आत्मकथा में पुरुष–प्रधान संस्कृति का चित्रण भी किया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक स्त्री को पुरुष के सहारे की आवश्यकता होती है, परंतु कस्तूरी को पुरुष की लाठी स्वीकार्य नहीं है। वे स्त्री को स्वावलंबी बनाना चाहती हैं। इसीलिए वे 'महिला ग्राम' नामक समाज सेवा संस्था की स्थापना भी करती हैं। यहाँ तक की वे स्त्री के शादी के विरोध में भी हैं। उन्हें पता है शादी करके पति की गुलामी करनी पड़ती है। इस संदर्भ में वे कहती हैं– ''इनको पता नहीं कि विवाह के बाद पति का पत्नी पर कैसा कब्जा होता है? क्या इनकी मर्जी के बिना इनके घर की औरतें चौखट के बाहर कदम रख सकती है? पढ़ाई–लिखाई से मिली सभ्यता को मर्द लोग औरत के पक्ष में नहीं खपाते, बल्कि उसको अपनी तरक्की का साधन बनाकर आगे बढ़ जाते हैं।''[6]

पुरुष–प्रधान समाज में स्त्री को निर्णय प्रक्रिया में सम्मिलित नहीं किया जाता। भले ही निर्णय उसके जीवन से संबंधित क्यों न हो। निर्णय लेने का अधिकार केवल पुरुषों को होता है। चाहे पारिवारिक निर्णय हो या सामाजिक। मैत्रेयी पुष्पा की शादी तय करने के लिए जब बैठक लगती है तो कस्तूरी सिर्फ देखने का काम करती है। लेन–देन की सारी बातें भगवानदास और गाँव के पंच करते हैं। कस्तूरी रिश्ता पक्का करने के लिए पाठक के घर दो–चार चक्कर लगाती है, तो पाठक बातों ही बातों में उसे 'राँड़' इस संबोधन का प्रयोग करता है। बेटी के लिए उसकी छटपटाहट 'राँड़' इस एक शब्द तक सीमित रह जाती है। इस संदर्भ में वे कहती हैं– ''पुरुषों जैसे काम करने से पुरुष नहीं मान ली जाती स्त्री। सामाजिक कामों के चलते उसे किसी पुरुष की जरूरत होती है, पाँच या दो साल का हो।''[7] मैत्रेयी पुष्पा की शादी एक डॉक्टर से होती है। पढ़ा–लिखा परिवार होने पर भी उस पर कई बंधन होते हैं। जब मैत्रेयी को पहली लड़की होती है तो पति का चेहरा देखने जैसे था। पति–पत्नी में प्यार भरा रिश्ता नहीं तो वह पति की पूजा क्यों करें। लेखिका ऐसे पति पर गुस्सा प्रकट करते हुए लिखती हैं– ''मादा का स्वामी नर अपने शिकार को मनमाने तौर पर झिंझोड़ता है। पति का यही रूप होता है, तो पति का नाम जल्लाद या दरिन्दा होना चाहिए।''[8]

मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तूरी कुण्डल बसै' में भारतीय नारी के जीवन पर प्रकाश डाला है। लेखिका ने आत्मकथा के माध्यम से भारतीय समाज की

सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण किया है। साथ ही भारतीय स्त्री केकष्टपूर्ण जीवन का उद्घाटन भी किया है। स्त्री पढ़ी–लिखी हो या अनपढ़ परिवार में उसे पुरुष पर ही निर्भर रहना पड़ता है। व्यक्ति स्वातंत्र्य, विचार स्वातंत्र्य पुरुष की तुलना में कम ही दिया जाता है। असमान व्यवहार के कारण उसे जीवनभर संघर्ष करना पड़ता है जिसका सूक्ष्म चित्रण करने में लेखिका ने सफलता पायी है।

संदर्भ :–

1.कस्तूरी कुण्डल बसै – मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.संस्करण
2.कस्तूरी कुण्डल बसै – मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.संस्करण 2002, पृ. 112
3.कस्तूरी कुण्डल बसै – मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.संस्करण 2002, पृ. 31
4.वही, पृ. 135
5.कस्तूरी कुण्डल बसै – मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.संस्करण 2002, पृ. 100
6.कस्तूरी कुण्डल बसै – मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.संस्करण 2002, पृ. 63
7.वही, पृ. 72
8.वही, पृ. 249

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : http://oldror.lbp.world/